IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, May 2020
Impact Factor: 4.819

lar dchj ds lkfgR; ij ckS) /keZ dk çHkko

Mk- jhrk flag
vfl0 izkQslj bfrgkl
ifMr jkeyq[ku "kqDy jktdh; ih th dkyst] vkykiqj] vEcsMdjuxj
ritasingh806@gmail.com

lkjka'k

प्रस्तुत शोध–पत्र "संत कबीर के साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव" भारतीय बौद्धिक परंपरा की बहुआयामी अंतर्धाराओं का समन्वित एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस शोध का मूल उद्देश्य यह प्रतिपादित करना है कि कबीर की वाणी केवल निर्गुण भक्ति की काव्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि वह भारतीय श्रमण परंपराकृविशेषतः बौद्ध दर्शनकृकी मानवीय, तर्कशील और समतामूलक चेतना का मध्यकालीन पुनर्संयोजन भी है। मध्यकालीन भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत ऊँच–नीच, धार्मिक आडंबर, कर्मकांड और सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध कबीर का जो सशक्त प्रतिरोध दिखाई देता है, उसकी वैचारिक जडें प्राचीन भारतीय चिंतन की उन धाराओं में खोजी जा सकती हैं, जिन्होंने मनुष्य को केंद्र में रखकर धर्म और दर्शन का पुनर्परिभाषण किया। इस संदर्भ में गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित दुःख–निवारण, करुणा, अनात्मवाद, अनित्यता और मध्यमार्ग जैसे सिद्धांतों का विशेष महत्व है।

शोध में तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से यह विश्लेषित किया गया है कि कबीर के साहित्य में बौद्ध दर्शन की प्रतिध्वनियाँ किस प्रकार रूपांतरित होकर उपस्थित होती हैं। कबीर का कर्मकांड–विरोध, जाति–प्रथा की तीखी आलोचना, मानव–केन्द्रित दृष्टिकोण तथा सामाजिक समता का आग्रह बौद्ध संघ–परंपरा और समतामूलक आदर्शों से साम्य रखता है। इसी प्रकार 'अहं' के निषेध और आत्मिक शुद्धि पर बल देने की प्रवृत्ति बौद्ध अनात्मवाद की स्मृति कराती हैय तथापि कबीर आत्मा के अस्तित्व को पूर्णतः नकारते नहीं, बल्कि उसे निर्गुण ब्रह्म के साथ अभिन्न मानते हुए एक आध्यात्मिक पुनर्व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार उनके चिंतन में बौद्ध प्रभाव प्रत्यक्ष अनुकरण के रूप में नहीं, बल्कि वैचारिक संवाद और सांस्कृतिक अंतःप्रवाह के रूप में दृष्टिगत होता है।